रसूल स० की बेटी

(क़िस्त : 02)

लेखक : मौलाना रज़ीउद्दीन हैदर साहब, संस्थापक यादगारे हुसैनी हायर सेकेन्ड्री स्कूल इलाहाबाद

एक बार का ज़िक्र है कि हज़रत अली ने कहा कि उम्मुल हसनैन खाना लाइए। खाना मात्रा में कम था। आपने उत्तर दिया; घर में सिवा इस खाने के जो मैंने बच्चों के खाने से बचाकर आपके लिए रख छोड़ा है (कुछ नहीं है)। इस लिए कि आपके खाने को अपने और बच्चों के खाने से अधिक महत्व देती हूँ। "यह सुनकर हज़रत अली ने फरमाया कि पहले क्यों नहीं बताया कि घर में खाने को कुछ नहीं है। आपने जवाब दिया कि जब मैं जानती थी कि जो बात सम्भव नहीं है उसको आपसे क्यों कहूँ।

लड़कियो ! इससे यह शिक्षा मिलती है कि शौहर से ऐसी बात न कहनी चाहिए जिसे वह पूरा न कर सके और अपनी मजबूरी के ख्याल से उसको दुख पंहुचे।

बात कड़वी है मगर लिखने योग्य है। वर्तमान युग में जब कि हर तरफ फ़ैशन करने की धुन है और इस पर बहुत पैसा व्यर्थ खर्च किया जाता है और लड़कियां इस बात का बिल्कुल ख्याल नहीं करतीं कि उनके मां बाप बेकारी और बेरोज़गारी से परेशान हैं। वह विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की फरमाइश करती हैं जिससे कभी कभी आपस में मलाल पैदा हो जाता है और शौहर के दिल में उनकी (मान) मर्यादा कम हो जाती है।

नेक और समझदार लड़कियों को सदैव इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि ऐसे हालात में अनुचित फरमाइशों से अपने शौहर को परेशान न करें।

शर्मो हया (लज्जा)

औरत का कमाल (पूर्णतया) और उसकी सबसे बड़ी खूबी क्या है? उसकी खूबी शर्मो हया और इस्मत (इज़्ज़त की रक्षा) और पाकदामनी है। जनाबे सय्यदा के शर्मो हया के हालात मानव इतिहास में अद्वितीय हैं। वाकयात से पता चलता है कि बीबी फातमा ने तमाम उम्र हज़रत अली से आंख मिलाकर बात नहीं की बल्कि हमेशा नीची निगाह करके बात चीत करती थीं। कहा करती थी कि एक औरत को किसी दूसरी औरत के शारीरिक अंगो, उसकी बनावट और उसके चेहरे के सौन्दर्य इत्यादि का ज़िक्र अपने शौहर से कभी न करना चाहिए ताकि किसी गैर और न (दूसरी, अजनबी स्त्री) की बातें सुनने के बाद मर्द के दिल में किसी प्रकार का खयाल न पैदा हो सके। एक बार रसूलल्लाह ने अपने सहाबियों (साथियों) को सम्बोधित करके पूछा कि औरत की सबसे बड़ी खूबी क्या है? किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। जब बीबी फात्मा को इस सवाल के बारे में मालूम हुआ तो आपने कहा कि औरत की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह किसी गैर मर्द को न देखे और न कोई गैर मर्द उसे देखने पाए। इस छोटे से वाकये में बीबी फात्मा ने औरत की खूबी (सद्गुण) और शराफ़त (कशिष्टता) की क्या ही अच्छी पहचान बताई है।

एक रोज़ एक अंधे सहाबी रसूल की तलाश में जनाबे सय्यदा के घर पर आए और यह मालूम करके कि रसूलल्लाह घर में हैं खूद भी घर में चले आए। आप उनको आता हुआ देखकर तुरन्त कोठरी में चली गईं। जब वह वापस चले गये और बीबी फात्मा कोठरी से बाहर आई तो हज़रत ने पूठा कि बेटी तुम क्यों छुप गई थीं। कहा कि चादर इतनी छोटी थी कि मैं सर छुपाती तो पैर खुल जाता और पैर छुपाती तो सर खुल जाता। हज़रत रसूल खुदा ने फरमाया कि वह तो नाबीना (अंधे) थे। आपने उत्तर दिया "बाबा जान ! उनके आंखें न थी मगर मैं तो नाबीना न थी ना महरम को देखती रहती ?

पर्दे का महत्व बीबी फात्मा की निगाह में

क्या था इस वाकये से रोशनी पड़ती है कि पैग़म्बर के इन्तिकाल के बाद एक दिन बड़ी सोच में चुप बैठी हुई थीं कि जनाबे फिज़्ज़ा ने जो आपकी दासी थी, पूछा कि ऐ रसूल की बेटी आप क्या सोंच रही हैं। आपने फरमाया कि अरब में मय्यतें इस प्रकार उठाते हैं कि मुर्दे का पूरा शारीरिक ढ़ाचा दिखाई पड़ता है। मुझे फिक्र है कि मेरा जनाज़ा (शव) भी क्या यूं ही उठेगा। फिज़्ज़ा ने कहा कि मुल्के हबश (हबश देश) में ताबूत बनाते हैं जिसके अन्दर मय्यत रख देते हैं तो दिखाई नहीं देती। यह कहकर उसका नक्शा बना कर दिखाया जिसे देखते ही आप मुस्कुरा दी और फरमाया खुदा तुम्हारा पर्दा ऐसा ही रक्खे जैसा तुमने मेरे लिए पर्दे का सामान कर दिया।

इन वाकयात से मालूम होता है कि औरत का कमाल उसका पर्दा है और उसकी आबरू शर्मो हया है। काश हमारे यहां की औरतें बीबी फात्मा के बताए हुए रास्ते पर चलने की कोशिश करें।

आज कल के ज़माने में पर्दा तरक्की के रास्ते में एक बड़ी रूकावट समझा जाता है। कहा जाता है कि पर्दे में रहने वाली लड़कियां किसी प्रकार की तरक्की नहीं कर सकतीं कहने वालों से यह पूछना चाहिए कि वह लड़कियों से किस प्रकार की तरक्की की मांग करते हैं। अगर वह चाहते हैं कि वह लड़कियां तहज़ीबो–तरबिअत, अतवारो आदात, इल्मो हुनर (ज्ञान, कला), सलीका मन्दी और किफायत शआरी, (मितव्ययिता) गैरतों खुददारी (स्वाभिमान) और अख्लाको इन्सानियत (चिष्टाचार एवं मानवता) में तरक्की करे तो यह बातें घर की चहारदीवारी में भी हासिल हो सकती हैं अलबत्ता अच्छे माहौल और मुनासिब तालीम की ज़रूरत होगी।

हज़रत फात्मा के प्यारे बच्चे

आपके तीन लड़के और दो बेटियां हुई। सबसे पहले इमाम हसन 15 रमज़ान सन् 3 हिजरी को पैदा हुए उनके बाद हज़रत इमाम हुसैन 3 शाबान सन् 4 हिजरी को पैदा हुए। उनके बाद जनाबे जैनब और जनाबे उम्मे कुल्सूम पैदा हुई। इन चार बच्चों के बाद आखिरी बच्चा यानी जनाब मुहसिन मां के पेट ही में पहलू पर चोट लगने की वजह से मर गये थे। यह इतिहास का बड़ा दर्दनाक वाकया है। पहलू पर चोट दरवाज़ा गिराए जाने की वजह से आयी थी।

यह बच्चे जिनका नाम ऊपर आया है मां की खूबियों का पूरा नामूना थे। इनमें से प्रत्येक के जीवन का अध्ययन करने से पता चलता है कि हज़रत फात्मा ने उनकी देखभाल और शिक्षा दीक्षा बड़े पाक और सच्चे उसूलों (सिद्धान्तों) पर की थी जिसका फल यह हुआ कि सब किसी न किसी प्रकार इस्लाम धर्म की उन्नति और सेवा में हमेशा तल्लीन और आगे आगे रहे और सेवा कार्य में अपनी जानें भी अर्पित करके नेकी और सच्चाई का पाठ पढ़ा गये।

लड़कियो ! खूब समझ लो कि बच्चों की प्रारम्भिक तालीम व तरबियत (शिक्षा दीक्षा) मां की गोद ही में प्राप्त होती है और उसी के अनुसर बच्चों का भविष्य बनता है।

बाप का बेटी के प्रति प्रेम और आदर

दुनिया में आज भी बहुत से बाप और बेटियां हैं। लेकिन आज तक न ऐसा बाप हुआ और न ऐसी बेटी हुई। जब सैय्यदा रसूले खुदा की खिदमत में आतीं तो आप उठ कर खड़े हो जाते थे, उनकी पेशानी (माथा) चूमते थे और अपनी जगह पर बेटी को बिठाते थे। हज़रत का यह खास अमल (बर्ताव) बेटी की उन खूबियों की बिना (आधार) पर था जो उनकी जात (निज) के अन्दर पाई जाती थी। वरना आज तक किसी बाप ने बेटी का इस प्रकार आदर नहीं किया है। रसूले खुदा भी जब बेटी के घर आते तो आप भी वैसा ही अमल करती थी। बाप को देखकर फौरन ही ताज़ीम (सत्कार, महिमा) के लिए उठ खड़ी होती।

रसूलल्लाह को अपनी बेटी से अथाह प्रेम था जिसका अन्दाज़ा निम्नलिखित उदाहरण से किया जा सकता है। हज़रत जब किसी जंग के लिए जाते तो सब रिश्तेदारों से मिलने के बाद आखिर में जनाबे सय्यदा से रूख़सत (विदा) होते थे और जब वहां से वापस होते तो सबसे पहले बेटी के पास आते और खैरियत (कुशल मंगल) पूछते। अगर बाप और बेटी की आपसी प्रेम की सारी बातें लिखी जाए तो इस विषय पर एक पूरी किताब लिखी जा सकती है मगर मुझे तो बीबी फात्मा की ज़िन्दगी के और पहलुओं (प्रकरणों, प्रसंगों) पर भी इसी किताब में कुछ रोशनी डालना है।

बीबी फ़ात्मा का इल्म (ज्ञान)

पैग़म्बरे–इसलाम का हुक्म है कि इल्म हासिल

करना (ज्ञान प्राप्ति) तमाम (तमाम) मुसलमानों पर वाजिब (अनिवार्य) है। हमें यह देखना है कि रसूले खूदा की इस बेटी ने अपने बाप के इस हुक्म पर कहां तक अमल (पालन) किया। ज़माना वह था कि जब न कोई मदरसा था न स्कूल और न किसी के दिमाग में स्त्री–शिक्षा की बात थी जिससे यह गुमान (अनुमान) किया जा सके कि शायद इल्म की रोशनी इन साधानों से प्राप्त हुई होगी मगर ऐसे उपलब्ध साधन उस समय बिल्कुल नहीं थे। अगर इसे मान भी लिया जाए तो सय्यदा के लिए रसूल की गोद रिसलत के माहौल से बढ़कर कौन सा मदरसा हो सकता था।

बीबी फात्मा की ज़िन्दगी ऐसे वाकयात से भरी पड़ी है जिससे उनके इल्म का कुछ अन्दाजा हो जाता है।

बीबी फात्मा उन धार्मिक व्याख्यानों को जो रसूलल्लाह मस्जिद में दिया करते थे इमाम हसन से घर में बैठ कर और पर्दे में बैठकर सुना करती थी। लड़कियों के लिए इल्म हासिल करने का निःसन्देह यह बेहतरीन तरीका जिसको तालीम (शिक्षा) जनाबे सय्यदा ने दी है। बहुत से ऐसे भी हैं जो मुखतलिफ मौक़ो (अनेक अवसरों) पर खुद आपने इरशाद फरमाये हैं और वे अरबी भाषा के बेहतरीन नमूने हैं। आप कभी–कभी कविता भी कहती थी। आपका एक बहुत दर्दनाक और मशहूर शेर हैं जो आपने अपने बाप के शोक में बहुत दुःख उठाने के बाद कहा।

सुब्बत अलैया मसायबुन लौ अन्नहा।
सुब्बत अलल ऐयामे सिर्र्–न लयालया।।

मुझ पर वह मसीबतें पड़ी कि अगर चमकते हुए दिनों पर पड़तीं तो वह अंधेरी रात हो जाते यानी उनकी रोशनी अंधेरे में बदल जाती।

जनाबे सैय्यदा की वीरता

हम एक वाक़ेया नीचे लिखते हैं जिससे मालूम होगा कि सय्यदा को अपने बाप से कितना प्रेम था और यह भी मालूम होगा कि रसूल की बेटी में कितनी जुरअत (साहस) और हिम्मत थी हालांकि आप पर्दे में रहती थीं और घर से कदम बाहर निकालना अच्छा नहीं समझती थीं परन्तु एक अवसर ऐसा पड़ गया कि आपने बहुत दिलेरी (जियालेपन) और बहादुरी से चादर ओढ़कर मैदाने जंग का रूख किया। ओहद की लड़ाई में जब रसूल का एक दांत शहीद हो गया और दुश्मनों ने घेर कर आपको एक गढ़े में गिरा दिया तो उस वक्त शैतान ने आवाज़ लगाई कि मुहम्मद साहब शहीद कर दिए गए। बेटी को कान में जैसे ही बाप की शहादत की यह दिल तोड़ देने वाली आवाज़ पंहुची तो बीबी फात्मा बेचैन हो गई। ओहद का मैदान मदीने की आबादी के करीब था। आप ऐसी परेशान और बेचैन थी कि आपकी चादर का सिरा ज़मीर पर लोटता जाता था। उस वक्त तक हज़रत अली ने जंग करके दुश्मनों को भगा दिया था और रसूले खुदा को संभालने के लिए गढ़े के पास आ गये थे। इतने में बीबी फात्मा भी वहां पंहुच गई और बाप की हालत देखकर रोने लगीं। खुदा के फज़्ल (दया) से जख्म गहरा नहीं था। हज़रत अली जल्दी जल्दी ढाल में पानी भर भर के लाने और लगे और बाप की चहेती बेटी जख्म को धोने लगी।

लड़कियो ! सय्यदा का मैदाने जंग (रणक्षेत्र) की तरफ जाना और दुश्मनों की कसरत (अधिकता) से न डरना हमें बताता है कि उनको अपने बाप से कितनी मुहब्बत थी और यह भी मालूम होता है कि ऐसी मुसीबत के समय पर एक औरत भी निडर होकर मदद के लिए तैयार हो जाती है।

बेशक ऐसे ही वह मौके हुआ करते हैं जब किसी औरत का घर से बाहर निकलना न मज़हब के विरूद्ध है न खिलाफे अक्ल (बुद्धि के विरूद्ध)। अलबत्ता इस आलमे परेशानी (व्याकुलता की दशा) में भी जहां तक हो सके पर्दे का ख्याल रखना ज़रूरी है।

शौहर की इताअत और फरमांबरदारी (आज्ञापालन)

लड़कियो ! तुम शुरू में पढ़ चुकी होगी कि बाप ने बेटी को विदा करते वक्त नसीहत की थी कि फात्मा तुम अली से कभी किसी चीज़ की फरमाइश न करना, क्योंकि अली के पास माले दुनिया से कुछ नहीं है। बेटी ने बाप की इस ताकीद (आग्रह) पर सदैव अमल किया और उनसे कभी कुछ नहीं मांगा बल्कि उनके घर में तक्लीफ के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी। शौहर का आज्ञापालन और बच्चों के पालन–पोषण का हमेशा ख्याल रखा। घर के छोटे से छोटे काम में कभी शर्म नहीं महसूस की। झाड़ू देना, बर्तन धोना, खाना पकाना, पानी भरना और चक्की पीसना प्रतिदिन के काम थे। एक बार बीमारी की हालत में आप चक्की पीस रही थीं। जब हज़रत अली ने देखा तो फरमाया

कि इस हालत में यह सख्त मशक्कत (परिश्रम) क्यों उठा रही हैं? आपने जवाब दिया कि आपकी इताअत (आज्ञापालन) और खुशी के लिए।

घरेलू काम–काज के सिलसिले में एक वाक़ेया और भी मिलता है। एक दिन रसूले खुदा ने देखा कि उनकी बेटी ऊँट के ऊन की एक चादर ओढ़े चक्की चला रही हैं और बच्चे को दूध भी पिला रही हैं, यह हालत देखकर आपके आंसू निकल आए और फरमाया ऐ मेरी प्यारी बेटी ! दुनिया की तल्खी (कड़वाहट) को हंसी खुशी बरदाश्त कर लो ताकि आखिरत की शीरीनी (मिठास) तुमको हासिल हो। बीबी फात्मा ने जवाब दिया कि ऐ बाबा खुदावन्द तआला (परमेश्वर) की नेमतों का हज़ार हज़ार शुक्र है उसकी हर नेमत पर उसकी तारीफ लाजिम (आवश्यक) है।

इस प्रकार की दुख भरी ज़िन्दगी के बावजूद अपने शौहर से बहुत प्रेम करती थीं। आपके जब देहान्त का वक्त आया तो बहुत बेचैन होकर रोने लगीं। हज़रत ने पूछा आपके इस समय रोने का क्या कारण है। जवाब दिया कि मेरा रोना उन मुसीबतों पर है जो मेरे बाद आप पर पड़ेंगी।

लड़कियो ! तुमने अक्सर घरों में जहां गरीबी के कारण तक्लीफ़ रहती है तो अपने शौहरों से गड़ती हैं और कभी–कभी अपने को कोसती और खुदा की शान में अपशब्द निकालती हैं। यह बेसब्री बीबी फात्मा की सीरत (चरित्र) के खिलाफ है।

बाप की वफ़ात (स्वर्गवास) पर बेटी की हालत

जब जनाबे रसूले–खुदा बीमार हुए तो बीबी फात्मा बहुत परेशान हुई। उन दिनों हज़रत रसूल किसी बीबी के यहां थे। आप घर का सब काम जल्दी जल्दी खत्म करके बाप की खिदमत (सेवा) में चली जाती और तीमारदारी (रोगी सत्कार) में लग जाती। जब मरज (रोग) में कमी होती तो सय्यदा का चेहरा खुशी से बहाल हो जाता और जब बीमारी बढ़ जाती तो आप भी बेचैन और व्यकुल हो जाती। रफ्ता–रफ्ता मरज बढ़ता गया तो सय्यदा ने घर जाना भी छोड़ दिया और आठों पहर बाप के पास रहने लगीं। रसूल का जब आखिरी वक्त हुआ तो आपने बेटी को सीने से लगाया और सब्र करने की वसीअत की। बाप के इन्तेक़ाल के बाद सय्यदा का बुरा हाल हो गया। गम का एक पहाड़ था जो टूट पड़ा। आप दिन रात रोया करती थीं। सात दिन तक घर से बाहर नहीं निकलीं। आठवें दिन कब्र पैग़म्बर पर आई। रोने–पीटने के बाद गश खाकर गिर पड़ी। मदीने की औरतों ने संभाला और मुंह पर पानी छिड़क कर होश में लाईं तो आपने जोर–जोर से रोकर अपने बाप से फरियाद कीः–

"ऐ बाबा ! आपके बाद तनहाई में मेरा कोई मूनिसो मददगार नहीं। आपकी जुदाई (विरह) में मेरी आंखों से आंसू नहीं रूकते। दुनिया मेरी निगाहों में अंधेरी हो गई। आप का गम हर लमहा (मल) मुझे बेचैन रखता है। ऐ खुदा ! मुझको बहुत जल्द उठा ले कि मैं दूनिया से बहुत सेर हो गयी हूँ। इसके बाद चीख़–चीख़ कर रोना शुरू किया और यह हालत हुई कि मालूम होता था रूह बदन से निकल जायेगी। बीबी फात्मा के मुसलसल दिल हिला देने वाले बैन से घबरा कर मुहल्ले वालों ने हज़रत अली से कहा कि हम अपना काम काज नहीं कर सकते हमारी तरफ से रसूल की बेटी से कह दीजिए कि वह दिन को रोया करें या रात को ताकि हम लोग किसी वक्त अपना काम भी कर सकें। बीबी फात्मा ने सुनकर जवाब दिया कि आप उन लोगों से कह दीजिए कि फात्मा अब बहुत कम दिन ज़िन्दा रहेगी मगर यह मुमकिन नहीं कि जीते जी बाप को न रोये। हज़रत अली ने मुहल्ले वालों के ख्याल से जन्नतुल बकी में एक कोठरी बनवा दीजहां बीबी फात्मा बच्चों के साथ सुबह को चली जाती थीं और वहां बैठकर दिन भर रोया करती थीं। रात को हज़रत अली जाकर उन्हें घर ले आया करते।

बाप की जुदाई का इतना असर था कि एक बार अज़ान में अशहदो–अन्ना–मुहम्मदुर्रसूल्लाह–सुन लिया तो बाप का ज़माना याद आ गया और रसूल्लाह की तस्वीर आंखों में फिरने लगी। दिल उमड़ आया। आंखों से आंसू बहने लगे और फिर बेहोश हो गई।

आं हज़रत के इन्तेक़ाल के बाद बीबी सय्यदा वाकई बहुत कम दिन जीवित रहीं यानी सिर्फ 75 रोज़। बाप के बाद बेटी भी ग़म में घुल–खुल कर जन्नत को सिधार गईं।

'इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन'

(हम सब अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर पलट जाएंगे।)

जनाबे सय्यदा की वफ़ात

(3 जमादियुस्सानी सन् 11 हिजरी)

लड़कियो ! यहां तक तो तुमने अपनी बीबी की ज़िन्दगी के हालात पढे हैं जिससे अच्छी–अच्छी नसीहतें मिलती हैं मगर अब वह अवसर आता है कि तुमसे पढ़ा न जाएगा। जिस तरह उनकी ज़िन्दगी के हालात दुनिया की और दूसरी औरतों से बिल्कुल अलग दिखाई देते हैं उसी तरह उनकी वफ़ात के हालात भी दुनिया से जुदा है।

सय्यदा बीमार हुईं और गमों से इस दर्जा निढ़ाल हुई की मरज बढ़ता ही गया। उसी आलम में वह खुदा से निम्नलिखित शब्दों में प्रार्थना करती थीं:–

"या हैय्यो या कैय्यूम बिरहमतिक अस्–तग़ीसो फ़–अग़िस्नी अल्लाहुम्म ज़हज़नी अनिन्नार व अद्खिल्निल जन्ना व अल्हिक़नी बि अबी मुहम्मदिन् व आलेही।"

(ऐ जिन्दा, ऐ कायम (टिकने वाले) ! मैं तेरी रहमत (दया) की मदद चाहती हूँ। तू मेरी मदद फ़रमा। ऐ खुदा तू मुझे आग से दूर रख और मुझको जन्नत में दाखिल (प्रवेश) फ़रमा और मुझको मेरे बाप मुहम्मद और उनकी आल औलाद (सन्तान) से मिला दे।)

जब बीबी फात्मा के इन्तक़ाल का दिन आया तो आपने उस दिन कई कई काम एक साथ करना शुरू कर दिये। आटा भी गूँघ कर रख दिया। सर धोने के लिए मिट्टी भी भिगो दी और हसनैन के कपड़े भी धोने लगीं। हज़रत अली ने यह देखकर फ़रमाया कि ऐ रसूल की बेटी आज क्या बात है कि एक ही वक्त में दुनिया के कई कामों में मशगूल (कार्यरत) हैं हालांकि पहले ऐसा न करती थीं। आपने जवाब दिया ऐ अबुल हसन आज मेरा रोज़े वफात (स्वर्गवास का दिन) है मैंने चाहा कि बच्चों को सर धुलाकर नहला दूँ , रोटियां भी पकाकर खिला दूँ और उनके कपड़े भी साफ कर दूँ। इसलिए कि आप तो मेरे ग़म में मुब्तिला (लीन) रहेंगे मेरे बच्चों का खबर कौन लेगा। यह सुनकर हज़रत अली बेचैन हो गये और आंखों में आंसू भरे हुए नमाज़ के लिए मस्जिद की तरफ चले गए। बीबी सय्यदा ने बच्चों का हाथ पकड़ा और कब्रे रसूल से विदा हुईं। फिर बच्चों को सीने से लगाया, प्यार किया और कहा कि तुम दोनों थोड़ी देर के लिए मस्जिद में जाकर अपने बाप के पास बैठो। खूद घर वापस आई और अस्मा को बुला कर कहा कि तुम आज घर से न जाना। मैं कोठरी में जाकर इबादते खुदा में मशगूल होती हूँ। कुछ देर के बाद तुम तीन मरतबा आवाज़ देना अगर जवाब न मिले तो अन्दर चली आना और समझ लेना कि मैं अपने बाप के पास पंहुच गई। यह फरमा कर दो रकअत नमाज़ पढ़ी और दुआओं में मसरूफ़ (व्यस्त) हो गई। कुछ देर बाद जब अस्मा ने आवाज़ दी और कोई जवाब न मिला तो समझ गई कि बीबी ने इन्तेक़ाल फरमाया। इतनी ही देर में हसनैन भी आ गये और अपनी मां को पूछने लगे। अस्मा खामोश हैं, क्या जवाब दें। चेहरे पर रंजोमलाल (दुःख) के असार (लक्षण) हैं। घबराकर दोनों बच्चे कोठरी में दाखिल हुए और देखा कि उनकी प्यारी मां का इन्तेक़ाल हो गया है। रोते हुए मस्जिद की तरफ दौड़े और हज़रत अली को इस दिल हिला देने वाली घटना की सूचना दी। हज़रत अली यह ख़बर पाते ही बेचैन हो गये। सर से अमामा (पगड़ी) उतार दिया और घर में आए। बे इन्तेहा दुःख और शोक के साथ मय्यत को गुस्ल देने और कफनाने में मशगूल हुए। हज़रत अलीने बीबी फात्मा की वसीअत के अनुसार रात में उनका जनाज़ा उठाया और जन्नतुलबक़ी में दफ़न कर दियाजन्नतुलबक़ी एक पुराना कब्रस्तान है जिसमें कई इमामों की कब्रें मौजूद हैं और जिनपर कुब्बे बने हुए थे मगर हाय अफ्सोस नज्द के बादशाह इब्ने सऊद ने बड़ा ग़ज़ब किया। सबकी कब्रें खुदवा दीं, कुब्बे गिरवा दिए और जन्नत की शाहज़ादी फात्मा का रौज़ा भी खोद कर ज़मीन के बराबर कर दिया और आज सिर्फ चिन्ह के तौर पर पत्थरों के कुछ टुकड़े रखे हुए हैं। खुदा इस जुल्म का जल्द बदला ले जो आठ शौव्वाल 1346 हिजरी को हुआ।

लड़कियो ! तुम्हें अपनी शाहज़ादी की याद ताज़ा रखने के लिए उनके हालात ब्यान करना और उनकी मुसीबतों पर आंसू बहाना चाहिए।

सब्र हज़रत फात्मा की खास शान

लड़कियो ! तुमने पैदाइश से लेकर वफ़ात तक के मुख्तसर हालत (संक्षिप्त उल्लेख) पढ़ लिए। क्या तुम बता सकती हो कि हज़रत फात्मा की ज़िन्दगी का सबसे रौशन पहलू कौन सा है? अगर तुम ज़रा सा गौर करेगी तो मालूम हो जएगा कि वह "सब्र" है। हज़रत फात्मा हर हाल में सब्रो शुक्र (सहिष्णुता और